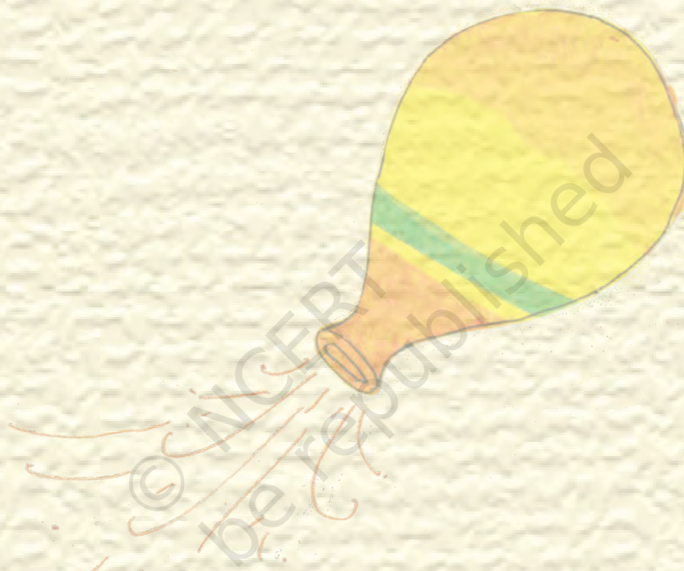




21043



₹ 15.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5007-353-7 (वर्षा-सैट)
978-93-5007-361-2

मिल्याः वायुलूनम्



पठनम् एव अवगमनम्

प्रथम संस्कृत संस्करण : अगस्त 2015 श्रावण 1937

पुनर्मुद्रण : अगस्त 2020 श्रावण 1942; जून 2021 ज्येष्ठ 1943

PD 4.5T RPS

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, (स्वर्गीय) लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

संपादक (संस्कृत) – कृष्णचन्द्र त्रिपाठी

संस्कृत अनुवाद – रणजित बेहेरा, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

चित्रांकन: कनक शशि **सज्जा तथा आवरण–** निधि वाधवा

संस्कृत समीक्षा समिति

यज्ञ दत्त शर्मा, सेवानिवृत *प्रोफ़ेसर संस्कृत,* दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर संस्कृत,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली; राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रोफ़ेसर संस्कृत,* संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा; भागीरथी नन्द, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* साहित्य विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली; पतञ्जलि कुमार भाटिया, *अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सूर्य नारायण नन्द, *अतिथि अध्यापक,* सेंट स्टीफेन्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; हरेकृष्ण अगस्ति, *असिस्टैंट प्रोफ़ेसर,* व्याकरण विभाग, कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र; सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी. संस्कृत,* केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड; निर्मल मिश्र, *टी.जी.टी. संस्कृत,* केन्द्रीय विद्यालय, नरेला, दिल्ली; डॉ. जतीन्द्र मोहन मिश्र, *सह आचार्य,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

आभार ज्ञापन

प्रो. बी.के.त्रिपाठी, *निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; कृष्ण कुमार, *पूर्व-निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; वसुधा कामथ, *पूर्व-संयुक्त-निदेशक,* केन्द्रीय शैक्षिक प्रोद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; उमा शंकर शर्मा ऋषि, *पूर्व विभागाध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार; के. के. वशिष्ठ, *पूर्व-विभागाध्यक्ष,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा ??

ISBN 978-93-5007-353-7 (वर्षा-सैट)
978-93-5007-361-2

वर्षा-क्रमिक-पुस्तकमाला प्राथमिककक्षाया: बालानां कृते वर्तते। अस्या: अभिप्राय: – 'बोधनेन सह' स्वयंपठनस्य अवसरपरिकल्पनं वर्तते। अस्या: पुस्तकमालाया: कथा: चतुर्षु स्तरेषु पञ्चसु कथावस्तुषु च विभक्ता: सन्ति। 'वर्षा' बालानाम् सानन्दं पठने स्थायिपाठकत्वेन निर्माणे च सहायिका भविष्यति। बालेभ्य: दैनन्दिन्य: लघुलघुघटना: कथा इव रुचिकरा: प्रतीयन्ते। अत: वर्षा-मालिकाया: सर्वा: कथा: दैनिकजीवनस्य अनुभवान् आधृत्य वर्तन्ते। लघुबालानां पठनाय प्रचुरमात्रायां पुस्तकानि उपलब्धानि स्युरिति अस्या: पुस्तकमालाया: अपरमुद्देश्यं वर्तते।

वर्षा-पुस्तकमाला बालानां पठन-शिक्षणे, स्थायिपाठकनिर्माणे, सूचनासंग्रहणे पाठ्यचर्याया: प्रत्येकं क्षेत्रे च सहायिका भविष्यति। शिक्षका: वर्षा-मालिकां कक्षायाम् तथा स्थापयेयु: येन बाला: सुखेन पुस्तकानि ग्रहीतुं शक्नुयु:।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बंगलूरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*

मिल्याः वायुलूनम्

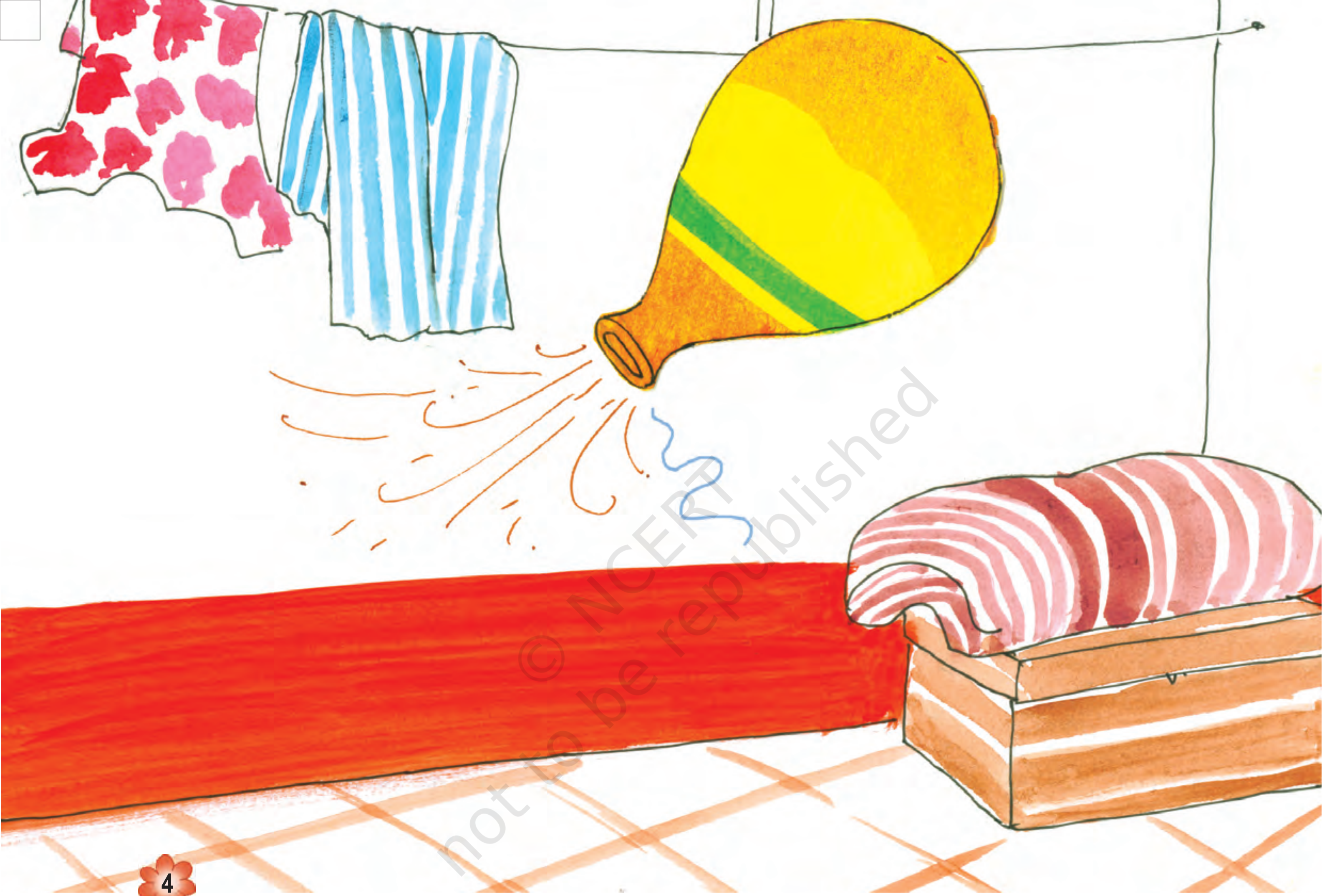




एकदा मिल्याः पिता वायुलूनम् आनयत्।



मिली वायुलूनम् उच्छालितवती।



वायुलूनात् शनैः शनैः वायुः निस्सृतः।



सङ्कुचत् वायुलूनं छद्यां न्यपतत्।



वायुलूनं वायु-निर्गमनात् अधः पतितम्।



मिली वायुलूनं पुनः स्फोरितवती।



मिली वायुलूनं पुनः उच्छालितवती।



वायुलूनं सॅू-सॅू-सॅू-ध्वनिम् अकरोत्।



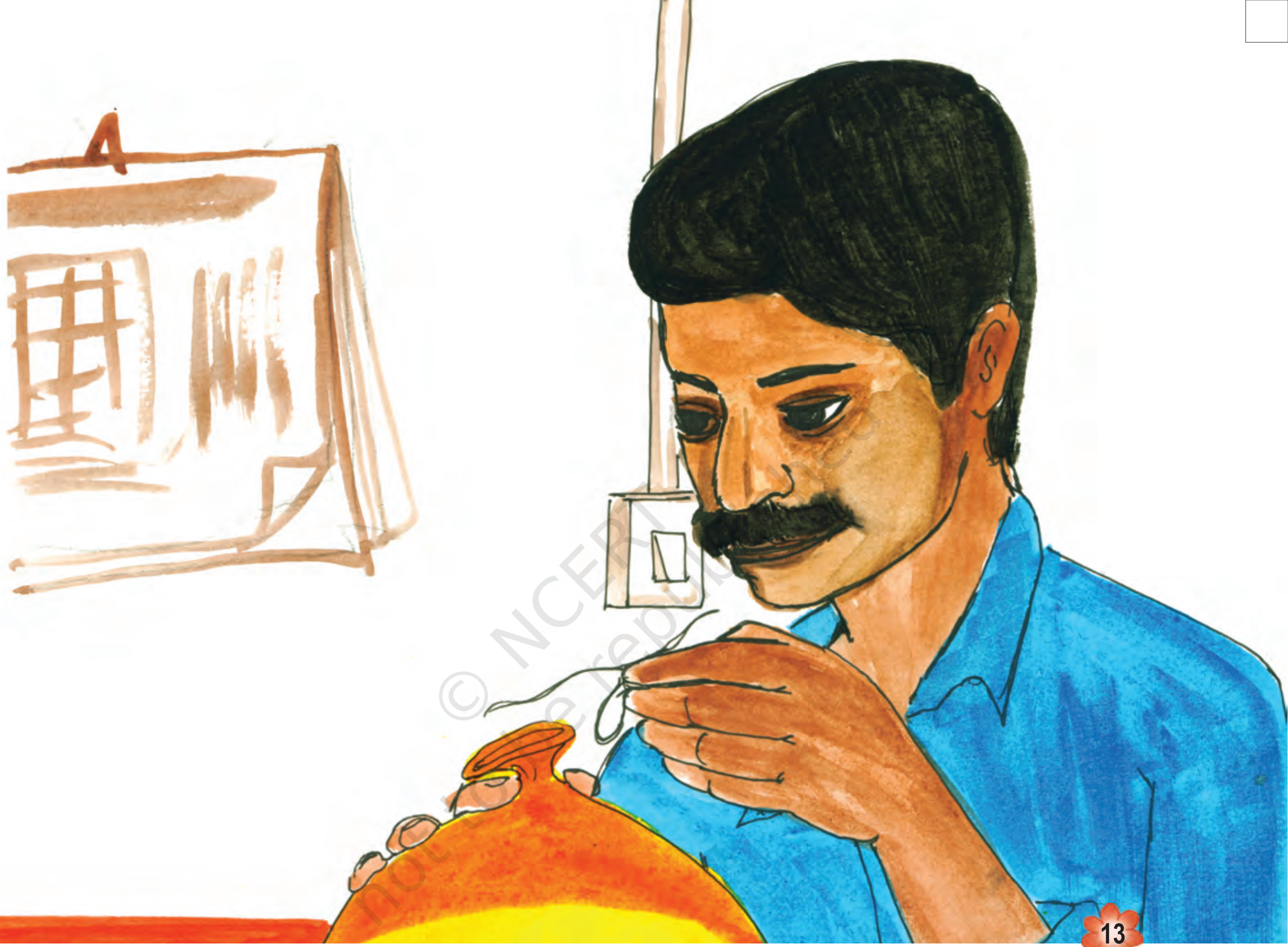
मिली वायुलूनस्य ध्वनिना अति प्रसन्ना अभवत्।



मिली पितरं वायुलूनस्य–ध्वनिं श्रावितवती।



पिता वायुलूनं पुनरपि स्फोरितवान्।



पिता वायुलूनं सूत्रेण बद्धुम् आरभत।



मिली सूत्र-बन्धनात् निवारितवती।



सूत्र-बन्धनेन ध्वनिः न निःसरति।



मिल्यै सङ्कुचतः वायुलूनस्य ध्वनिः रोचते।

तोसिया-मिल्योः अपराः कथाः













